कथा सरिता

बादशाह को मिली सीख

एक बार प्रसिद्ध विद्वान हजरत अबू बकर सिद्दिकी को मदीना का वजीर नियुक्त किया गया। उनकी तनख्वाह को लेकर माथापच्ची करने के बाद अंत में यह निर्णय हुआ कि उनसे पूछकर ही उनका वेतन तय किया जाए। बादशाह स्वयं उनके पास गए और उनके सामने अपनी समस्या रखी। अबू बकर ने कहा, जहांपनाह, यह तो कोई समस्या ही नहीं। मैं कोई जनता से अलग तो हूँ नहीं। बताइए, मदीना का एक औसत मजदूर महीने में कितना कमा लेता है? बादशाह ने कहा, तकरीबन एक दीनार तो कमा ही लेता है। अबू बकर ने कहा, ठीक है। मेरी तनख्वाह एक दीनार रखी जाए। बादशाह हैरत में पड़ गए और बोले कि इससे ज्यादा तो मेरा नौकर कमाता है। आपकी बराबरी एक नौकर से नहीं हो सकती। अबू बकर ने कहा, आपने मुझे मुल्क का वजीर इसलिए बनाया कि मैं यहां गरीब जनता के हित में काम करूं। लेकिन जब मुझे उनके दर्द का पता ही नहीं चलेगा, तो मैं कैसे उनके हित की बात सोचूंगा। एक मजदूर के बराबर तनख्वाह लेने से मुझे इतना तो पता रहेगा कि यहां साधारण लोग किस हाल में रहते हैं। वे अपना गुजर-बसर किस तरह से करते हैं और उनकी भलाई कैसे हो सकती है। हमारी तनख्वाह ज्यादा होगी तो हमें पता ही नहीं चलेगा कि देश में क्या हो रहा है। बादशाह ने फिर जोर देकर कहा, यह नियम के खिलाफ होगा। आपकी तनख्वाह एक मजदूर के बराबर नहीं हो सकती। अबू बकर ने मुस्कराकर कहा, फिक्र मत करिए। मैं हमेशा कोशिश करता रहूंगा कि यहां के मजदूरों की आमदनी जल्दी-जल्दी बढ़ती रहे। इससे मेरी तनख्वाह अपने आप ही बढ़ती जायेगी। यह सुनकर बादशाह ने शाही खर्च में भारी कटौती कर दी।

अहम् को छोड़ दो

एक राजा था। उसने परमात्मा को खोजना चाहा। वह किसी आश्रम में गया। उस आश्रम के प्रधान साधु ने कहा, जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे छोड़ दो। परमात्मा को पाना तो बहुत सरल है। उसने राज्य छोड़ दिया और अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दीं। वह बिल्कुल भिखारी बन गया। लेकिन साधु ने उसे देखते ही कहा, अरे, तुम तो सभी कुछ साथ ले आए हो! राजा की समझ में कुछ भी नहीं आया, पर वह बोला नहीं। राजा ने स्वयं को ऊपर से नीचे तक देखा और सोचने लगा, पता नहीं किस चीज को साथ लाने की बात यह साधु कर रहे हैं। पर उसे परमात्मा को पाने की धुन थी, सो उसने खामोश रहना ही उचित समझा। साधु ने आश्रम के सारे कूड़े-करकट को फेंकने का काम उसे सौंपा। राजा ने सोचा, साधु यह सोचता है कि मैं आम जनों की तरह मेहनत नहीं कर सकता। वह पूरी तल्लीनता से कूड़ा उठाने का काम करने लगा। आश्रमवासियों को यह बड़ा कठोर लगा, किंतु साधु ने कहा, सत्य को पाने के लिए राजा अभी तैयार नहीं है और इसके लिए लिए यह सब करना जरूरी है। कुछ दिन और बीते। आश्रमवासियों ने साधु से कहा कि अब वह राजा को उस कठोर काम से छुट्टी देने के लिए उसकी परीक्षा ले लें। साधु बोला, अच्छा! इस बार राजा को आश्रम से बाहर निकलकर गांव से दूर कूड़ा फेंकने का आदेश मिला। यदि मुझे परमात्मा को पाना न होता तो आज तुम्हें मैं भगवान से मिला देता। तुम्हारा भाग्य अच्छा है, जो मैं पहले जैसा नहीं रहा। अगले दिन राजा कचरे की टोकरी सिर पर लेकर गांव के बाहर फेंकने जा रहा था, तो एक आदमी रास्ते में उससे टकरा गया। राजा बोला, आज से पंद्रह दिन पहले तुम इतने अंधे नहीं थे। साधु को जब इसकी जानकारी मिली तो उसने कहा, संपत्ति को छोड़ना कितना आसान है, पर अपने को छोड़ना कितना कठिन है। तीसरी बार फिर यही घटना हुई। इस बार राजा ने रास्ते में बिखरे कूड़े को बटोरा और आगे बढ़ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उस दिन साधु बोला, अब यह तैयार है। जो अहम को छोड़ देता है, वही प्रभु को पाने का अधिकारी होता है। सत्य को पाना है, तो स्वयं को छोड़ दो। अहम से बड़ा और कोई असत्य नहीं है।

मानव सेवा बनाती है महान

कटक में जानकीनाथ बोस नामक एक संपन्न वकील रहते थे। एक रात वकील साहब सो रहे थे। उनकी पत्नी व पुत्र सुभाष भी वहीं सोए थे। थोड़ी देर बाद उनकी पत्नी ने देखा कि सुभाष जमीन पर सोया है। माँ को चिंता हुई कि बेटे को ठंड न लग जाए। उन्होंने उसे जगाकर पूछा - बेटा! जमीन पर क्यों सो रहे हो? सुभाष ने उत्तर दिया - माँ! हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि भी तो जमीन पर ही सोया करते थे। माँ बोली, बेटा! वे महान थे और उम्र में बड़े भी। तुम्हारी उम्र जमीन की कठोरता नहीं सह सकेगी। आजा बेटा पलंग पर सो जा। माँ-बेटे की बातचीत से जानकीनाथ बोस भी जाग गए। उन्होंने भी सुभाष से पूछा - जमीन पर सोना किसने सिखाया, बेटा? सुभाष बोला - पिताजी! गुरुजी कह रहे थे कि हमारे ऋषि-मुनि महापुरुष थे और वे जमीन पर ही सोते थे। मैं भी महान बनूंगा, इसलिए जमीन पर सो रहा हूँ। तब पिता ने उसे समझाया - जमीन पर सोने से महान नहीं बना जा सकता। कठोर तप-साधना और पीड़ित मानवता की सेवा से व्यक्ति महान बनता है। यही बालक आगे चलकर सुभाषचंद्र बोस के नाम से ख्यात हुआ। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर पिता की शिक्षा को साकार किया और विश्व को यह महत्वपूर्ण संदेश दिया कि त्याग और समर्पण से देशहित की शानदार इबारत लिखी जा सकती है।

जीवन की सार्थकता

एक सूखा वृक्ष खड़ा था। ठूंठ रह गया था। उसे भी लोग काटने की तैयारी करने लगे। ठूंठ ने लोगों पर कृतघ्नता का आरोप लगते हुए कहा, ये ही है वे लोग, जो मेरी छाया में फल सम्पदा का भरपूर लाभ उठाया करते थे। अब, जबकि मैं सूख गया हूँ, तो इन्हें मेरा अस्तित्व बना रहना भी सहन नहीं होता। पास में खड़ा दूसरा वृक्ष मुस्कुराया। उसने कहा - मित्र! अपने सोचने का ढंग बदलो। यह कहो कि जब हरा था, तो भी लोगों की सेवा करता रहा, और अब सूख गया हूँ, तो भी जलावन के रूप में उनके काम आता हूँ। मेरा सेवा-समर्पण का व्रत अंत तक निभता रहा। यह क्या कम सौभाग्य की बात है?

अहंकार से दूर रहो

एक पढ़ा-लिखा दंभी व्यक्ति नाव में सवार हुआ। वह घमंड से भरकर नाविक से पूछने लगा, क्या तुमने व्याकरण पढ़ा है? नाविक बोला, नहीं। दंभी व्यक्ति ने कहा, अफसोस है कि तुमने अपनी आधी उम्र यूं ही गंवा दी। थोड़ी देर में उसने फिर नाविक से पूछा, तुमने इतिहास व भूगोल पढ़ा? नाविक ने फिर सिर हिलाते हुए कहा, नहीं। दंभी ने कहा, फिर तो तुम्हारा पूरा जीवन ही बेकार गया। मांझी को बड़ा क्रोध आया, लेकिन उस समय वह कुछ नहीं बोला। अचानक हवा के तेज झोंकों से नाव हिलने-डुलने लगी। नाविक ने ऊंचे स्वर में उस व्यक्ति से पूछा, महाराज, आपको तैरना भी आता है कि नहीं? सवारी ने कहा, नहीं, मुझे तैरना नहीं आता। फिर तो आपको अपने इतिहास, भूगोल को सहायता के लिए बुलाना होगा, वरना आपकी सारी उम्र बर्बाद होने वाली है, क्योंकि नाव अब डूबने वाली है। यह कहकर नाविक नदी में कूद तैरता हुआ किनारे की ओर बढ़ गया।

मनुष्य को किसी एक विद्या-कला में दक्ष हो जाने पर गर्व नहीं करना चाहिए।

रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य की वृद्धावस्था थी। उनका नियम था कि जब वह गंगा स्नान के लिए जाते, तो हाथ ब्राह्मण शिष्य के कंधे पर रखते और जब स्नान कर वापस लौटते, तो हरिजन शिष्य के कंधे पर। यह सब देखकर ब्राह्मण शिष्य कुढ़ता था। एक दिन रामानुजाचार्य गंगा स्नान कर लौट रहे थे। तभी ब्राह्मणों ने उन्हें घेर लिया और क्रोधित हो उन्हें भला-बुरा कहा। रामानुजाचार्य ने संयत होकर कहा, भाइयों! मैं बहुत समय से गंगा स्नान कर रहा हूँ, लेकिन गंगा मैया मेरे उच्च कुल के अभिमान को आज तक नहीं धो सकी। यही कारण है कि मैं गंगा स्नान के बाद हरिजन शिष्य के कंधे पर हाथ रखता हूँ, ताकि मैं झूठे दंभ की चादर को उतारकर फेंक सकूं। इसके लिए यदि मुझे नरक भोगना भी पड़े, तो अवश्य भोगूंगा। यह सुनकर ब्राह्मणों का सिर शर्म से झुक गया और रामानुजाचार्य मुस्कराते हुए हरिजन शिष्य के कंधे पर हाथ रखकर आगे बढ़ गए।

जरा सोचो...?

जिसने तुम्हारे जीवन में खुशियों के द्वार खोले,
जिसने तुम्हारे सभी बोझ हर कर तुम्हें डबल लाइट बनाया,
जिसने तुम्हें सुखों का खजाना दिया,
उसे भूल तुम किसे याद करते हो...?

हरदोई - ज्योति नगर-यु.पी। प्रभु-मिलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक अशोक वाजपेयी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रोशनी, गायक कलाकार ब्र.कु. अविनाश एवं अन्य।

हरदुआगंज। जनपद स्तरीय रवी गोष्ठी में ''यौगिक खेती'' विषय पर प्रवचन करती ब्र.कु. पुष्पा। मंचासीन ब्र.कु. सत्यप्रकाश शर्मा फॉरेस्ट ऑफिसर तथा जिलाधिकारी अलीगढ , आलोक कुमार आई.ए.एस. तथा अन्य अधिकारीगण।

हाथरस। मेला श्री दाउजी महाराज में 'सर्व धर्म सम्मेलन' के अवसर पर मंचासीन पं. उपेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, ब्र.कु. सीता, ब्लाक प्रमुख रामेश्वर उपाध्याय, ब्र.कु. ममता ,अलवर, डॉ. मुफ्ती जाहिद ए खान, भिक्षु कंचन बोधि, पादरी सनतोष पाण्डे एवं सरदार मनजीत सिह।

जौनपुर -यु.पी.। पशुधन एव लघु सिंचाई मंत्री उत्तर प्रदेश को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. पद्मा बहन।

जशपुर नगर। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् होलीक्रास शिक्षक गण के साथ ब्र.कु. कुसुम एवं ब्र.कु. सरिता।

करनैलगंज -वाराणसी। पूर्व विधायक योगेश प्रताप सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।